بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974,Khulasakhutba-06.06.25.

विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर देते हुए सोशल मीडिया के उचित उपयोग के हवाले से स्वर्णिम उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

बयान फर्मूदः 06 जून 2025 , स्थान मस्जिद मुबारक, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया–

आजकल जहां सोशल मीडिया से लाभ है तथा इससे लाभ प्राप्त किया जाता है, वहाँ कुछ ऐसी बातें भी होती हैं जो कष्ट दायक होती हैं और उसी के माध्यम से आजकल विरोधी अहमदिय्या जमाअत के विरुद्ध अत्यन्त अपशब्द भी बोलते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में ऐसे झूट एवं गन्दी बातें बकते हैं कि अहमदी का दिल छलनी हो जाता है जिन्हें सुनकर, और फिर प्रतिक्रिया में कुछ अहमदी भी उनको जवाब अनुचित रंग में दे देते हैं, नीयत चाहे उनकी साफ़ भी हो तब भी कई बार ऐसे शब्द

निकल जाते हैं जिनको ग़लत अर्थ दिए जा सकते हैं। यह हमारा तरीक़ा नहीं है, इससे एक अहमदी को बचना चाहिए। हमारा काम यह नहीं है भद्दी भाषा को उपयोग में लाएं अथवा उसे इस रंग में उत्तर दें जिससे ना चाहते हुए भी हमारे मुंह से ऐसे शब्द निकल जाएं जो किसी भी रंग में, किसी को भी आहत करने का कारण बनें और उससे फ़ायदा उठा कर विरोधी पक्ष यह कहता रहे कि हम नऊज़ुबिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निन्दा अथवा सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम का अपमान करने वाले हैं, जबकि हमारे दिलों में तो आप स. तथा सहाबियों का जो स्तर है, उसका तो करोड़वाँ अंश भी इन लोगों के मस्तिष्क एवं बुद्धि तथा विवेक में नहीं है। हमारा तो सब कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर क़ुर्बान है, आप स. ही वे ख़ातमुल अम्बिया हैं जो अल्लाह तआला के प्यारे और अन्तिम नबी हैं, आप स. के साथी जो हैं, सहाबा जो हैं, उनके बारे में तो हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अनेक स्थानों पर वे वाक्य उपयोग किये हैं, वे बातें की हैं कि जो इनकी सोच से भी ऊपर हैं, जो हमारे विरोधी बात करते हैं।

अतः हमारे दिलों में केवल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ही प्रतिष्ठा नहीं, यह तो है ही, इस तक तो कोई पहुँच ही नहीं सकता, आप स. के सहाबियों का भी उच्च स्तर है हमारे दिलों में, और इस बात को हर अहमदी को सामने रखना चाहिए और ऐसी बातें करने से हर अहमदी को बचना चाहिए जिससे ग़लत प्रभाव पड़े अथवा ग़लत प्रभाव पड़ने की किसी रंग में भी संभावना हो। कुछ अहमदी समझते हैं कि हमने बड़ा स्वाभिमान प्रकट किया यह उत्तर दे कर, जब इनसे पूछो तो यही इनका जवाब होता है, जबकि यह तथाकथित स्वाभिमान एवं मूर्खता है, और यदि कोई अहमदी होकर ऐसी बातें करता है जिससे किसी भी तरह अनुचित अर्थ निकलता हो तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलै. और जमाअत को बदनाम करने वाला है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि-

तुमने धैर्य रखना है और सदेव धैर्य दिखाना है। एक स्थान पर आपने फ़रमाया- ये मुझे गालियाँ देते हैं परन्तु मैं इनकी गालियों की चिन्ता नहीं करता और न इन पर खेद अनुभव करता हूँ क्यूंकि वे अपने स्तर से व्याकुल

हो गए हैं तथा अपने दुःख को केवल गालियाँ देकर ही शांत कर सकते हैं। यह कमीनापन और ओछे हथियार उपयोग कर रहे हैं, इसलिए कि इनके पास कोई तर्क नहीं है, कोई जवाब नहीं है, तो ये लोग केवल गालियाँ देना चाहते हैं। आप फ़रमाते हैं- कुफ़्र के फ़तवे लगाएं, झूठे मुक़दमे बनाएँ तथा विभिन्न प्रकार के मनघड़त झूट एवं आरोप लगाएँ, वे अपनी पूरी शक्तियों को काम में लाकर मेरा मुक़ाबला कर लें और देख लें कि अन्तिम परिणाम किसके पक्ष में होगा। जो प्रयत्न करने हैं तु मने कर लो , लेकिन अल्लाह तआला मेरे साथ है, अन्तिम फ़ैसला तो नज़र आ जाएगा कि किसके साथ है। फ़रमाया कि मैं इनकी गालियों की अगर चिन्ता करूं तो असल काम जो ख़ुदा ने मेरे हवाले किया है, रह जाता है। इस लिए जहां मैं इनकी गालियों की चिन्ता नहीं करता, मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि इनके लिए यह उचित है कि इनकी गालियाँ सुन कर सहन करें और कदाचित गाली का जवाब गाली से न दें, क्यूंकि इस तरह बरकत जाती रहती है। वे संतोष एवं धैर्य का उदाहरण प्रकट करें तथा अपने नैतिक आचरण दिखलाएं। निःसंदेह याद रखो कि बुद्धि एवं जोश में भयानक दुश्मनी है। जब जोश एवं क्रोध आता है तो बुद्धि शेष नहीं रह सकती परन्तु जो धैर्य रखता है और सहनशीलता का नमूना दिखाता है, उसको एक नूर दिया जाता है जिससे उसकी बुद्धि एवं विवेक की शक्तियों में एक नई रोशनी पैदा हो जाती है और फिर इस नूर से नूर पैदा होता है । क्रोध एवं जोश की अवस्था में चूंकि दिल एवं मस्तिष्क अंधकारमय हो जाते हैं, इस लिए अँधेरे से अँधेरा पैदा होता है।

अतएव यह वह सबक़ है जिसे हमें सदा याद रखना चाहिए और ये जो कुछ लोग अपने आप को विद्वान समझते हैं और सोशल मीडिया पर जवाब देना शुरू कर देते हैं, ग़ैर जमाती जो तथाकथित मुल्लां हैं, जो लोग आपत्तियां करते हैं, उनकी आपत्तियों के उत्तर देने लगते हैं, उनको इस चीज़ से बचना चाहिए और यदि जवाब तलाश करने हैं तो जमाअती विद्वानों से, जमाअत का गहरा ज्ञान रखने वालों से और जमाअती लिट्रेचर का ज्ञान रखने वालों से पूछा जाए और उसके जवाब ऐसे दिए जाएं जो वास्तव में ठोस हों और उनके तर्कों को, उनके आरोपों को रद्द करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. की जो शिक्षा है, जो वास्तव में सही इस्लामी शिक्षा है, उसके अनुसार अमल करें, अन्यथा आप लोग जमाअत में रह कर फिर जमाअत को बदनाम करने वाले हैं। अल्लाह तआला हमें विरोधियों के उपद्रव से बचाए और उन लोगों को भी बुद्धि दे जो झूठा स्वाभिमान दिखने वाले हैं और कई बार अकारण कुछ शब्द प्रयोग करके आतंक एवं उपद्रव को फैलाने का कारण बन जाते हैं। यदि हम सोशल मीडिया पर इन जवाबों के बजाए अल्लाह तआला के समक्ष झुकें, अपनी नमाज़ों को संवार कर अदा करें, अपने सजदों में वह दर्द पैदा करें कि जिससे अल्लाह तआला की कृपा जोश में आए तो हम अति शीघ्र इससे अति सुन्दर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं जो परिणाम ये लोग अपने जवाब देने से प्राप्त करना चाहते हैं। इस लिए हर अहमदी को इस चीज़ से बचना चाहिए कि कभी ऐसी बातें न करें जो दुश्मन को अकारण ही यह अवसर दें कि अहमदी ने यह कह दिया और वह कह दिया। हमारे व्यवहार अति उच्चतम एवं अति सुन्दर होने चाहियें और जिसके नैतिक आचरण ऊंचे नहीं, उसने हज़रत मसीह मौऊद अलै. की बेअत का हक़ अदा नहीं किया। अतएव हमें अपने निरीक्षण करने चाहिएँ, हर एक आत्मनिरीक्षण करे, सोचे और बजाए अनुचित प्रकार के जवाबों के दुआओं की ओर ध्यान दे। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और विरोधियों के आतंक उनपर ही उलटाए और इससे से बचाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब